

चेतना का विज्ञान: आध्यात्मिक ऊर्जा का ब्लूप्रिंट

युग निर्माण के लिए व्यक्तिगत और सामाजिक परिवर्तन के वैज्ञानिक सूत्र (अध्याय ९-१२ का सार)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव

चेतना का गणित: १+१ = ११ (सिनर्जी)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप

साधारण अवस्था (भौतिक): १ शरीर + १ शरीर = २

— सब बच्चों से कहियेगा

गुरुदेव चेतना की अवस्था (आध्यात्मिक): १ जीव (आत्मा) + १ ब्रह्म (परमात्मा) = ११

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप झगझग सहियेगा के मे-रु-रु-रु रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

सत्य की पहचान: 'खिलौना ईश्वर' बनाम 'जीवन्त ईश्वर'

खिलौना ईश्वर (कर्मकांड)	जीवन्त ईश्वर (वास्तविक जुड़ाव)
 लागत: कम (आसानी से उपलब्ध)	 लागत: उच्च (अहंकार और वासना का त्याग)
 परिणाम: मात्र मनोरंजन / मानसिक सांत्वना	 परिणाम: अतुलनीय शक्ति और भारी वैचारिक हलचल
 प्रक्रिया: सिर्फ उपहार और स्तुति	 प्रक्रिया: उत्कृष्टता और उदारता का प्रत्यक्ष आचरण

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा— सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

ऊर्जा का उद्गम: भीतर की ओर

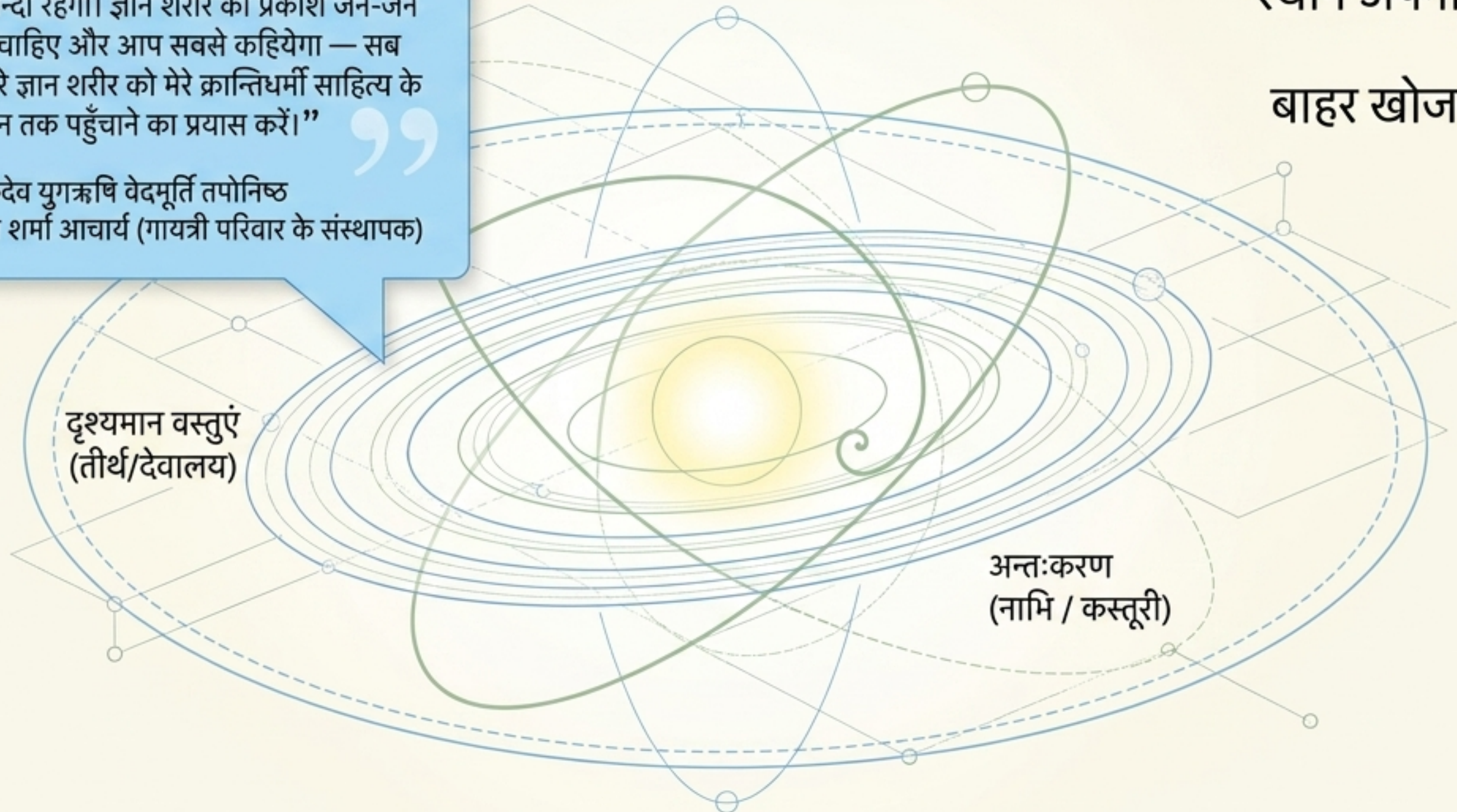
“ वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

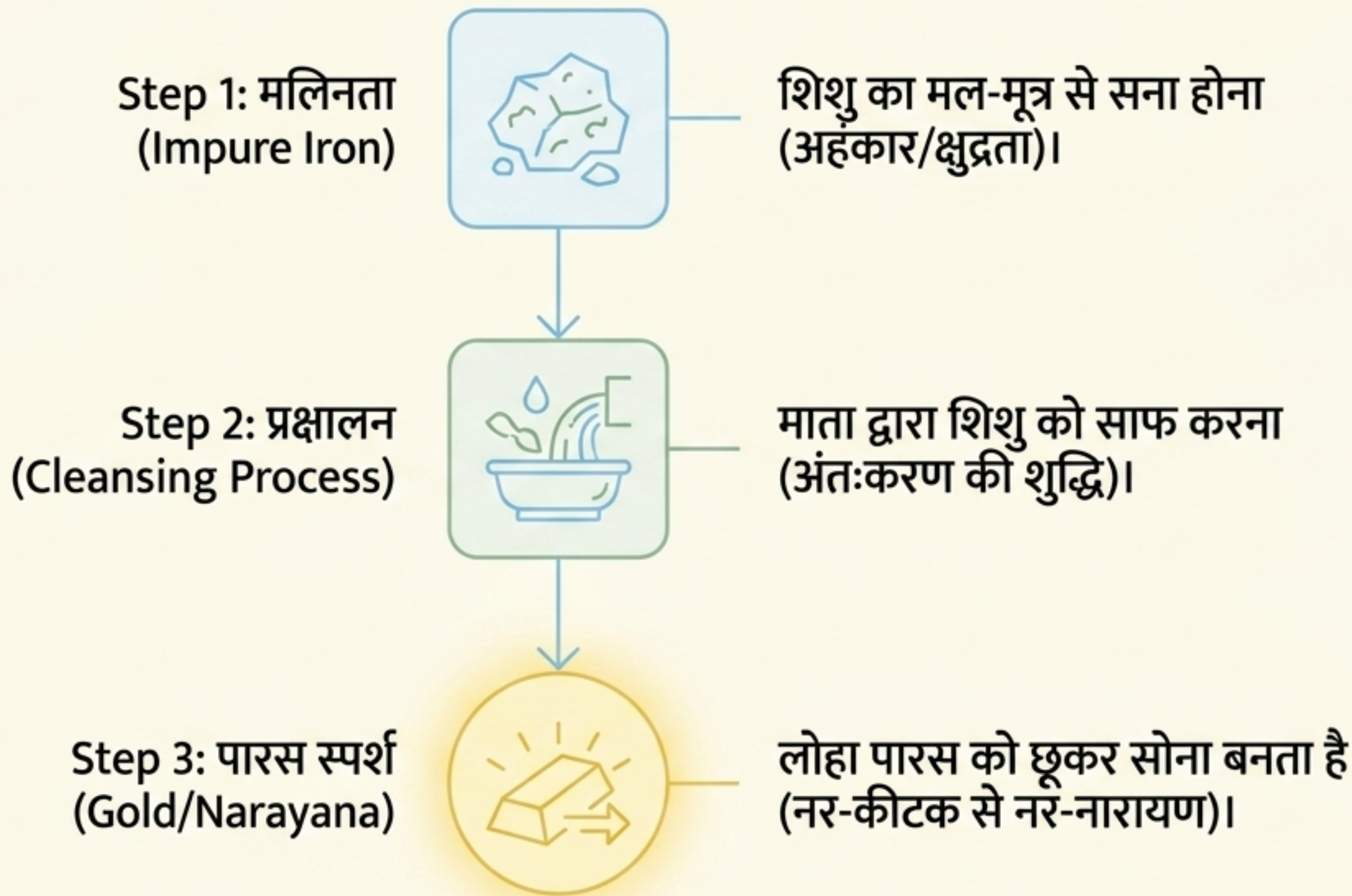
ईश्वर का सबसे निकटवर्ती और सही
स्थान अपना **अन्तःकरण** है।

बाहर खोजने पर केवल जड़
पदार्थ मिलेंगे।



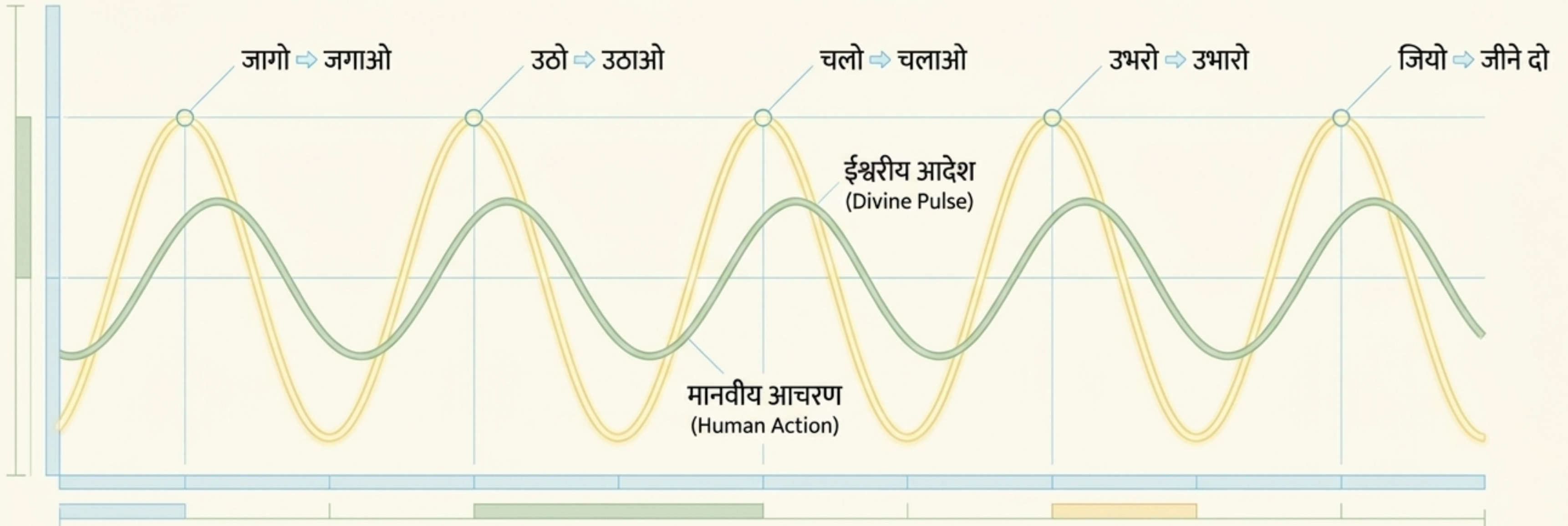
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रण ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर ज्ञान शरीर का प्रकाश ब के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे बीच में पतहुँयोग आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे बच्चों से कहिया करे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।” — पूज्य गरुच्चबननि सहज्वंघ का सप्तम खेलांन बादमांग गृह्यरी — पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

कीमिया (Alchemy): रूपांतरण का विज्ञान



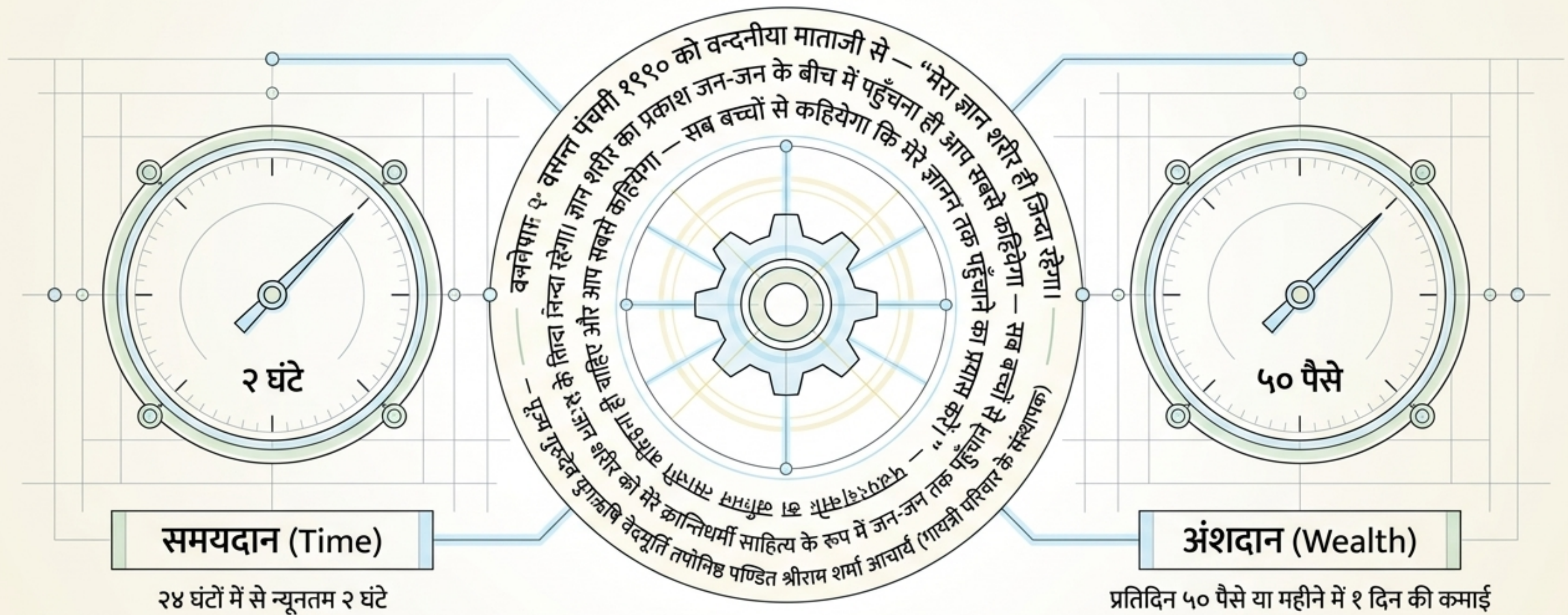
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

अनुनाद (Resonance): ईश्वरीय आदेशों की आवृत्ति



एप्लाइड मैकेनिक्स: सूक्ष्म निवेश (Micro-Investments)

उद्देश्य: सड़न भरी मान्यताओं को हटाना और प्राण-ऊर्जा से भरे युग-साहित्य को जन-जन तक पहुँचाना।



धर्म-तंत्र की नई तकनीक: दीपयज्ञ

परंपरागत कर्मकांड (Heavy Rituals)



दीपयज्ञ (Modern Protocol)



समय के अनुरूप, कम खर्च, और
उच्च लोक-शिक्षण (युग चेतना)।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

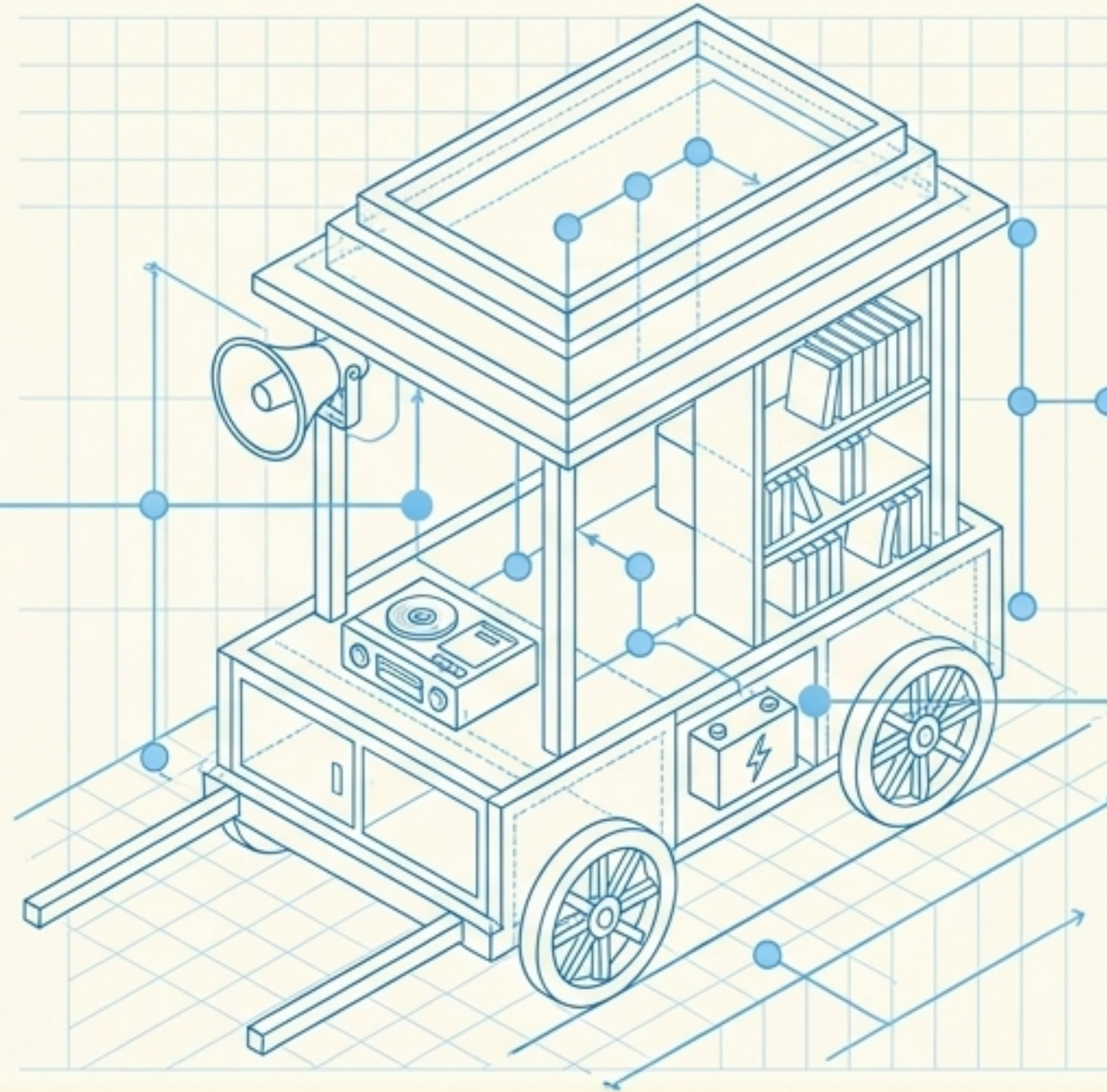
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा
— सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी
साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगकपि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गावड़ी परिवार के संस्थापक)

'ज्ञानरथ' का आर्किटेक्चर (चल-प्रज्ञा मंदिर)

लागत विभाजन (₹४००० कुल):

- ₹३०००: ढाँचा, लाउडस्पीकर, टेप रिकॉर्डर।
- ₹१०००: युग साहित्य (पुस्तकें)।



संचालन लागत: ₹१ प्रतिदिन
(बैटरी चार्ज और नई पुस्तकें)।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

ज्ञानरथ का ऑपरेशनल फ्लो (Operational Flow)

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर
का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए
और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा
कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के
रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
– पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित
श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

समयदान

(२ दिन का समय जोड़कर
तीसरे दिन ४ घंटे, या
साप्ताहिक छुट्टी का दिन)।

आध्यात्मिक कमाई

(पुण्य लाभ और जन-
समुदाय में सम्मान)।

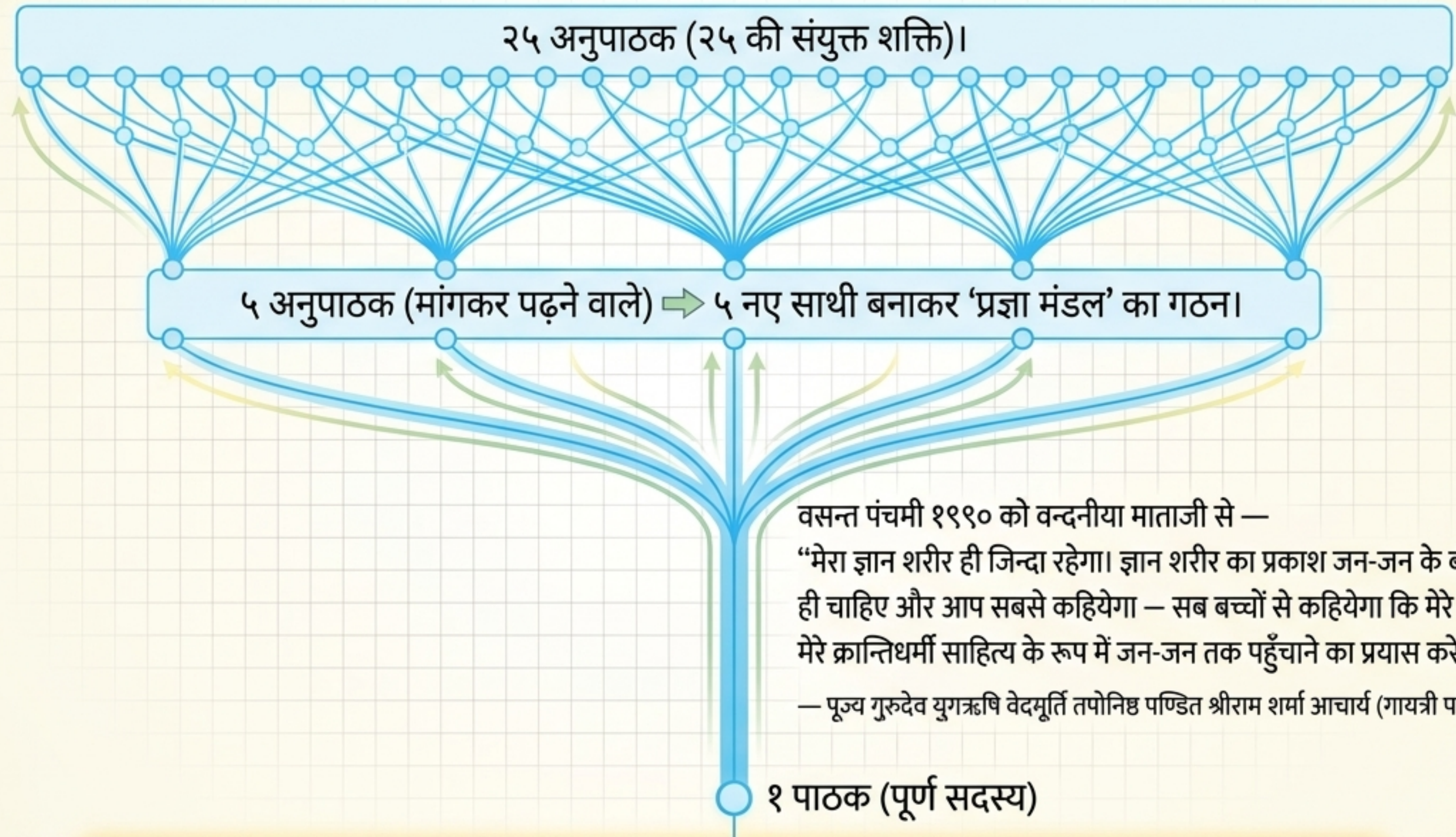
वितरण नीति

(पुस्तकें बेचना नहीं, मुफ्त पढ़ने
देना और वापस लेना)।

लोक-शिक्षण

(संगीत और प्रवचन द्वारा
नुक्कड़ सभाएं)।

चेतना का ज्यामितीय विस्तार (Network Effect)



वानरों/ग्वाल-बालों का समूह → हनुमान/गोवर्धन उठाने जैसी २५ की संयुक्त शक्ति (५ गुना वृद्धि दर)।

आध्यात्मिक थर्मोडायनामिक्स: ऊर्जा का क्षय

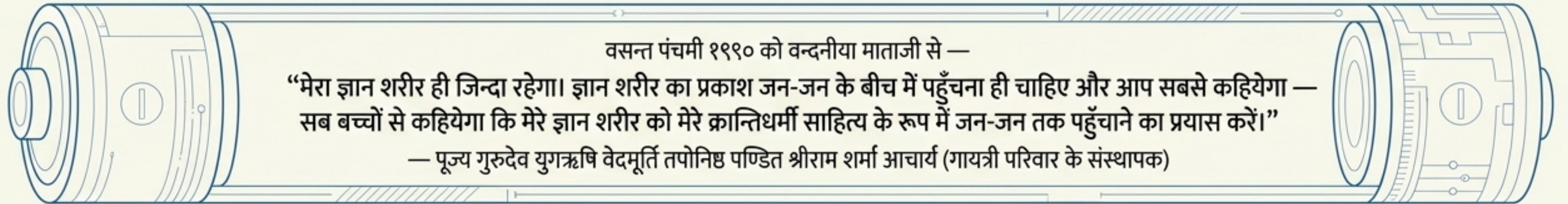
सांसारिक घर्षण से प्राण-चेतना मंद होती है। इसे बार-बार चार्ज करना पड़ता है।



अंगारे पर राख (Ash on Ember): आग को जीवित रखने के लिए राख हटाना अनिवार्य है।

गंदे कपड़े (Soiled Clothes): शरीर और कपड़ों को बार-बार धोने की आवश्यकता।

डिस्चार्ज बैटरी (Draining Battery): नेवले और सांप की लड़ाई — विष से उद्विग्न होने पर जड़ी-बूटी खाकर पुनः लौटना।



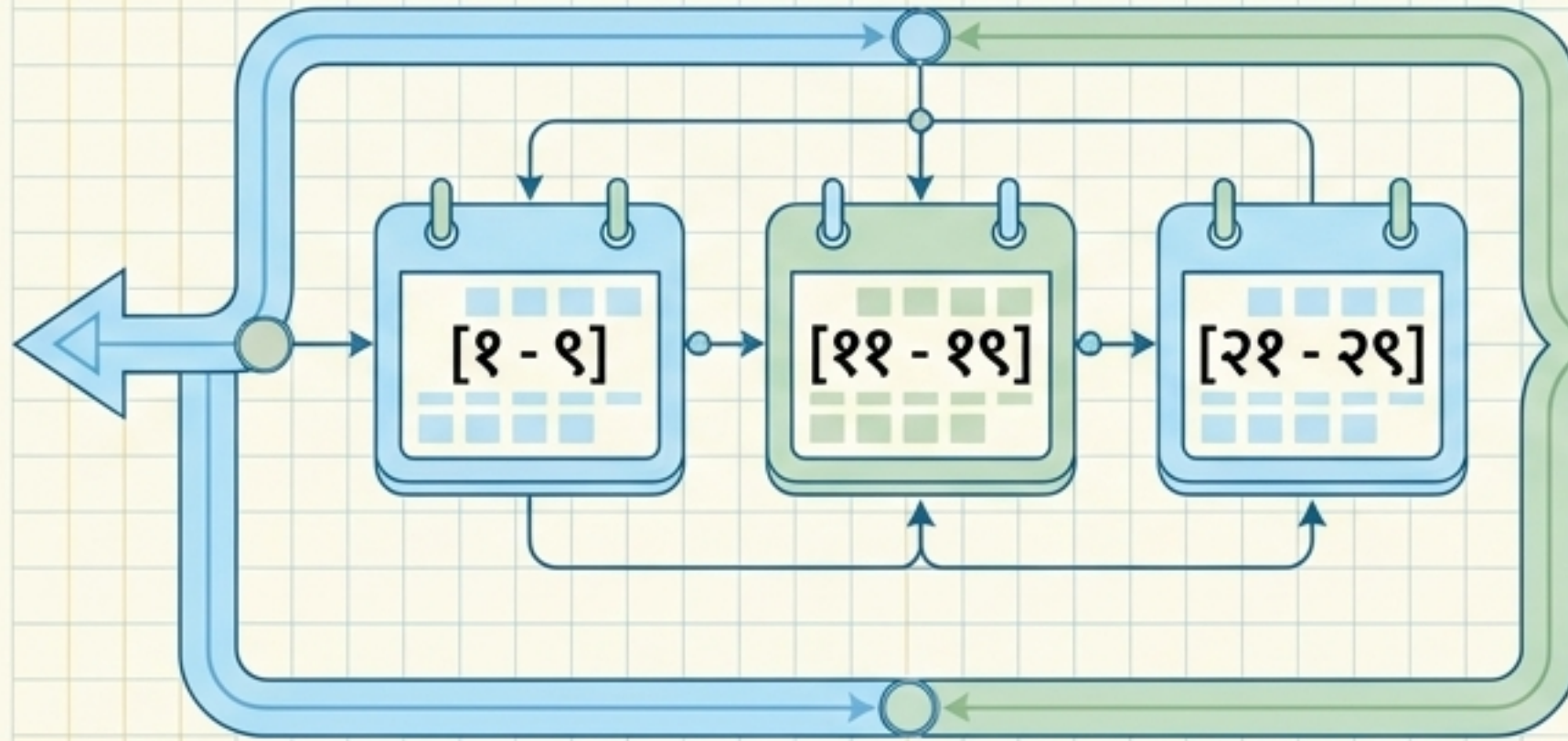
वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

रीचार्जिंग स्टेशन: ९-दिवसीय सत्र (शान्तिकुञ्ज)

कम से कम वर्ष में या दो वर्ष में एक बार
'बैटरी चार्ज' कराने का विज्ञान।



प्रतिबंध (Filter Gate):

अशिक्षित, रोगी, घुमक्कड़ के लिए नहीं। केवल सक्रिय और घनिष्ठ रूप से जुड़े सृजन-शिल्पियों के लिए।

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा
रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचना ही
चाहिए और आप सबसे कहियेगा
— सब बच्चों से कहियेगा
कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का
प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

द स्फिरिचुअल इंजन: संपूर्ण कार्यप्रणाली (Synthesis)

अल्पमत से बहुमत की ओर: सज्जनता को न केवल खड़ा करना है, बल्कि सुविस्तृत भी करना है (नवयुग का मत्स्यावतार)।

